विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 20-01-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

आज लृट् लकार की बात करते हैं। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लकार है। सामान्य भविष्यत् काल के लिए लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है। जहाँ भविष्यत् काल की कोई विशेषता न कही जाए वहाँ लृट् लकार ही होता है। कल, परसों आदि विशेषण न लगे हों। भले ही घटना दो पल बाद की हो अथवा वर्ष भर बाद की, बिना किसी विशेषण वाले भविष्यत् में लृट् का प्रयोग करना है। 'आज होगा' - इस प्रकार के वाक्यों में भी लृट् होगा।

भू धातु, लृट् लकार

भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति

भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ

भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः

आज मैं विद्यालय में होऊँगा।

= अद्य अहं विद्यालये भविष्यामि।

मैं विद्यालय में होऊँगा।

= अहं विद्यालये भविष्यामि।

कल मैं विद्यालय में होऊँगा।

= श्वः अहं विद्यालये भवितास्मि। (लुट् लकार)

शब्दकोश :

‘दिन’ के पर्यायवाची -

१] घस्रः (पुँल्लिंग)

२] दिनम् (नपुंसकलिंग)

३] अहन् (अहः) (नपुंसकलिंग)

४] दिवसः/दिवसम् (पुँल्लिंग / नपुंसकलिंग)

५] वासरः/वासरम् (पुँल्लिंग / नपुंसकलिंग)

६] भास्वरः (पुँल्लिंग)

७] दिवा (अव्यय)

८] अंशकम् (नपुंसकलिंग)

९] द्यु (नपुंसकलिंग)

१०] वारः (पुँल्लिंग)

सायम् - दिन का अन्तिम भाग (अव्यय)

प्राह्णः - प्रातःकाल (पुँल्लिंग)

मध्याह्नः - दोपहर (पुँल्लिंग)

अपराह्णः - दिन का द्वितीय अर्द्धभाग (पुँल्लिंग)

रात्रि के आरम्भिक काल के नाम -

१] प्रदोषः (पुँल्लिंग)

२] रजनीमुखम् (नपुंसकलिंग)